Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

पं. जसराज के भक्ति गीतों में विविध आध्यात्मिक आयाम

PRANALI SINGH
Research Scholar, Department of Music, Dayalbagh Educational Institute, Agra

सारांश: *पं. जसराज के भक्ति गीतों में संगीत के साथ-साथ आध्यात्मिक आयाम भी सुस्पष्टता से दृष्टिगोचर होते हैं| जहाँ उनकी भक्ति रचनाओं में रागों का प्रयोग सरलता से देखा जा सकता है, वहीं दूसरी ओर उनके भक्ति गीतों का अध्यात्मिक पक्ष भी अत्यंत सुदृढ़ रहा है| भक्ति से समृद्ध पंक्तियों का पुनः पुनः गायन उनकी रचनाओं की विशिष्टता है, जिसके कारण उनके द्वारा गेय भक्ति रचनाएँ जहाँ शास्त्रीय संगीतात्मक हैं वहीं आध्यात्मिक भी है| इस शोध पत्र में आधारभूत सांगीतिक पक्ष के साथ-साथ पंडित जसराज के गेय रचनाओं का आध्यत्मिक पक्ष भी उजागर किया जा रहा है|*

मुख्य शब्द: *पं. जसराज, भक्ति, भक्ति गीत, आध्यात्म|*

भूमिका

'संगीत मार्तण्ड पं. जसराज' उन महान विभूतियों में से एक हैं, जिन्होंने अपने जन्म एवं कर्म से न केवल भारत की इस पावन भूमि को वरन् समस्त संसार को अपने सुमधुर गायन द्वारा सुशोभित किया है| भारतीय संगीत के अनमोल रत्न पं. जसराज ने शास्त्रीय संगीत को तो उच्च शिखर प्रदान किया साथ ही भक्ति संगीत को भी श्रेष्टता की ओर लेकर गए| आपका व्यक्तित्व एवं अलौकिक गायन अनंत गुणों से विभूषित हुआ है तथा अपनी कठिन संगीत साधना व समर्पित सेवा भाव से सम्पूर्ण संगीत जगत एवं भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित किया है|

पं. जी मेवाती घराने से सम्बन्धित थे| मेवाती घराना उस्ताद 'घग्गे नज़ीर खां' द्वारा संस्थापित एक प्रसिद्ध घरानों में से एक है, परन्तु यह सर्विदित है कि आपने अपनी प्रतिभा द्वारा इस घराने की गायन शैली को सर्वोच्च स्थान पर पहुंचाने के जो अथक प्रयास किये हैं वह अतुलनीय है|

माँ सरस्वती के प्रिय पुत्र जसराज अत्यंत भक्तिपूर्ण व आध्यात्मिक व्यक्ति थे, जिनके द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत की गहराई को व्यक्त किया गया जो पूर्ण रूपेण आध्यात्मिक है| आप सर्वप्रिय समकालीन ख्याल गायकों में से एक थे, जिन्होंने विभिन्न स्त्रोतों व भजनों का गायन कर जनसामान्य के लिए सुलभ बनाया| पं. जसराज ने साधारणतया सभी देवी-देवताओं की स्तुति में भक्ति भाव से भरपूर आत्मा को तृप्त करने वाले दैवीय गान का गुणगान किया है तथा भक्ति गीतों को शास्त्रीय ढंग में पिरोकर अत्यंत निराला स्वरुप संगीत रसिकों व श्रोतागणों के सम्मुख प्रस्तुत किया है| आपके द्वारा गाये गए भक्ति गीत हमें दिव्यता की दुनिया की और अग्रसर करते हैं, जिनमें-

- श्री मधुराष्टकम्
- राम भजो आराम तजो
- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
- रानी तेरो चिर जियो गोपाल
- माता कालिका
- ओम
- हनुमान लला मेरे प्यारे लला
- भरत भाई कपि से उरिन हम नाहीं
- ब्रजे वसंतम
- गोविन्द दामोदर माधवेति

- माई सांवरे रंग रांची
- जगदंब-जगदंब

इत्यादि भक्ति गीत विशेष रूप से सम्मिलित हैं|

'भक्ति' शब्द की निष्पत्ति भज धातु में क्तिन प्रत्यय के योग से हुई है जिसका अर्थ है- भजन, सेवा, आराधना, ध्यान करना, बारम्बार स्मरण करना, अपने ईष्ट का नाम जपना आदि| अतः ऐसा कहा जा सकता है कि ईश्वर के प्रति निरंतर सेवा भाव, स्मरण भाव, पूज्य भाव, चिंतन-मनन व अपने अराध्य देव के प्रेम में डूबे रहना ही भक्ति है| प्रेम पूर्वक सेवा ही भक्ति के अर्थ को प्रदर्शित करती है| इस प्रकार भक्ति के विभिन्न रूप परिलक्षित होते हैं- ईश्वर भक्ति, मात्र भक्ति, पितृ भक्ति, देश भक्ति इत्यादि परन्तु जब केवल भक्ति शब्द का प्रयोग किया जाता है तो उस वक्त ईश्वर के प्रति भक्ति सम्बन्धी भाव ही प्रकट होता है| अब यदि भक्ति शब्द के गूढ़ार्थ को स्पष्ट करना चाहें तो कह सकते हैं कि भक्ति एक ऐसी क्रिया है जो भक्त का भगवन से सम्बन्ध स्थापित करती है अंतत: परमात्मा की प्राप्ति का एक मात्र साधन भक्ति है| अतः यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि श्रद्धा भाव से की जाने वाली वे समस्त क्रियाएँ जो हमें प्रभु की और ले जाती है वह भक्ति है जैसे-

कीर्तन, भजन, आरती, जगराता, हरिकथा,माता की भेंट, चालीसा, सत्संग, पूजा-पाठ आदि| उक्त क्रियाओं का गेय रूप ही भक्ति-गीत हैं अर्थात् अपने अराध्य की आराधना में प्रयोग किये गए शब्दों को स्वर व ताल में बाँध कर यदि कोई सांगीतिक रचना तैयार की जाए तो वह भक्ति गीत की श्रेणी प्राप्त कर लेते हैं| भक्ति के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानजनों द्वारा दी गई परिभाषाएं इस प्रकार है:-

शाण्डिल्य भक्तिसूत्र में भक्ति की व्याख्या इस प्रकार है-

"सा परानुरक्तिरीश्वरे"

अर्थात् परमात्मा के लिए परम अनुरक्ति ही भक्ति है|

नारद भक्ति सूत्र में भक्ति व्याख्या इस प्रकार से की गई है-

"सा त्वास्मिन परमप्रेमरूपा ||2||

अमृतस्वरूपा च ||3||"

अर्थात् ईश्वर के लिए प्रगाढ़ प्रेम जो अमृत के समरूप लाभदायक है, वही भक्ति है|

मधुसूदनकृत 'भक्तिरसायन' ग्रन्थ में भक्ति को इस प्रकार परिभाषित किया गया है-

"चित्तवृत्तियों का सर्वेश्वर के प्रति अक्षुण बना रहने वाला आकर्षण भक्ति है|"

नारद पांचरात्र में उल्लेखित भक्ति की परिभाषा इस प्रकार है-

"अन्य कामनाओं का परिहार करके निर्मल चित्त से समग्र इन्द्रियों द्वारा श्री भगवान् की सेवा का नाम भक्ति है|"

आध्यात्मिकता का पारस्परिक सम्बन्ध मणि-कांचन संयोग की भांति है| उसी संयोग को पं. जसराज द्वारा विभिन्न धर्मों को एक सूत्र में पिरोया गया है| उनके द्वारा प्रतिपादित विभिन्न आध्यात्मिक व धार्मिक आयाम निम्नवत् है-

हनुमान भक्ति प्रधान भक्ति गीत

हनुमान लला, मेरे प्यारे लला

प्यारे-प्यारे लला, सुकुमार लला

अंजनी पुत्र दी लंका जला

हनुमान लला.....||

भावार्थ: प्रस्तुत भजन में भगवान हनुमान को मेरे प्यारे लला के रूप में संबोधित करते हुए कहा गया है कि आपके रोम-रोम में राम जी समाए हुए हैं| आप ही हैं वह अंजनी के पुत्र जिन्होंने लंका-दहन किया| आपकी परम भक्ति व निरंतर राम-राम जप की माला करने से आपने स्वयं को राम जी का परम भक्त बनाया| तत्पश्चात कहा गया है की आप हैं वह शक्तिशाली महाबली जिन्होंने अपने हाथ से पर्वत को उठाया व लक्ष्मण जी के मूर्छित हो जाने पर उनके प्राणों की रक्षा कर उन्हें जीवित किया| अंत में, आप ही हैं वह बजरंगबली जो सभी संकट से मुक्ति प्रदान करते हैं तथा समस्त संकटों का निवारण करते हैं, इसी प्रकार अपने इस भक्त के संकटों का नाश करो प्रभु|

प्रस्तुत भक्ति गीत का सांगीतिक पक्ष

राग: प्रस्तुत भजन का गायन राग जोग में किया गया है|

ताल: अद्धा तीनताल|

उक्त भजन की गति मध्यलय में है व मध्यलय में ही शब्दों का राग जोग के चलन के अनुसार सहजतापूर्वक विस्तार किया गया है| सरोद की संतुलित झंकृति, मंजीरे की मंगलध्वनि व पखावज के पाटाक्षरों के माध्यम से भजन को संवारा गया है| विभिन्न तानात्मक स्वरूपों द्वारा, भाववाचक स्वर समुदायों द्वारा व अनेक प्रकार से प्रत्येक पंक्ति के गायन द्वारा यह भजन सौंदर्य को प्राप्त हो रहा है| राग जोग में निबद्ध यह भजन अद्धा तीनताल मध्यलय में शोभायमान है| इस भजन की मध्यलय काव्य योजना को भी अधिक स्पष्ट होने का अवसर प्रदान कर रही है| मध्यगति में कण, खटका, गमक, मींड आदि राग जोग के अवयवों का बखूबी प्रयोग हुआ है| पहले सरल सरंचना गाकर पुनः प्रत्येक पंक्ति को मींड, तानात्मक गमक द्वारा गाया गया है, जो कि इस भजन की सुन्दरता को पूर्ण कर रहा है|

प्रस्तुत भक्ति गीत का आध्यात्मिक आयाम

उपर्युक्त भक्ति गीत में हनुमान जी की प्रशंसा का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है| हनुमान जी की महिमा रागवाचक स्वरों द्वारा और भी मुखरित हुई है| एक-एक स्वर की बड़त करते हुए पं. जी द्वारा राग जोग का खुबसूरत चित्रण किया गया है, जिससे श्रोताओं पर भी हनुमान जी की भक्ति का दिव्य रंग चड़ने लगता है| प्रत्येक पंक्ति को विभिन्न रीति से गायन करने के अद्भुत अंदाज़ द्वारा भक्ति गीत में वीर रस के साथ-साथ भक्ति भाव में भी पूर्णतया वृद्धि की गयी है|

राम भक्ति प्रधान भक्ति गीत

राम भजो आराम तजो

राम ही जीवन सार सिखाए, राम ही बेड़ा पार लगाए

राम ही प्रेम की मूरत है, राम ही सत्य की सूरत है

राम ही भोग की सीमा है त्याग ही राम की महिमा है,

राम ही साथी राम सारथी, राम ही आदि अंत है

राम भजो.....||

भावार्थ: उक्त पद में भगवान विष्णु के अवतार श्री राम जिन्हें मर्यादा पुरषोत्तम भी कहा जाता है के गुणों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि आराम को त्याग कर राम नाम को भजना प्रारम्भ करिए क्योंकि राम ही बेड़ा पार लगाएंगे, उनका जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिए एक आदर्श है| सहनशीलता, धैर्य व दयालु स्वभाव राम के प्रमुख गुण है| राम तो साक्षात प्रेम की प्रतिमा व सच का रूप हैं| त्याग करना ही राम की महिमा है|राम सुख दुःख के साथी भी हैं और सारथी भी| आरम्भ भी राम से है और अंत भी इसलिए निरंतर राम-नाम का जप करिए|

प्रस्तुत भक्ति गीत का सांगीतिक पक्ष

राग: उक्त रचना राग भैरवी में निबद्ध है|

ताल: कहरवा (भजनी ठेका) का प्रयोग किया गया है|

विभिन्न आलाप, मींड, गमक, मुर्की व बोल आलाप द्वारा भजन का श्रृंगार किया गया व विभिन्न वाद्यों का मनोहारी प्रयोग किया गया है|

प्रस्तुत भक्ति गीत का आध्यात्मिक आयाम

उक्त रचना राम जी की स्तुति में गाया गया अति सुन्दर भक्ति गीत है जिसमें जसराज जी की दिव्य वाणी द्वारा राम नाम का श्रृंगार व उनके व्यक्तित्व का भावपूर्ण वर्णन किया गया है| राम शब्द स्वयं ही आध्यात्मिकता की चरम सीमा को पूर्ण करता है, इसी बात को सिद्ध करते हुए इस भजन द्वारा पं. जी ने राम नाम की महिमा का गुणगान किया है| प्रभु राम जी की चारित्रिक विशेषताओं को भैरवी के विशेष स्वर समुदायों में बांधकर बहुत ही सुमधुर ढंग से विभिन्न भावों व रसों को अपनी उत्कृष्ट गायकी द्वारा प्रदर्शित किया है| ऐसी मधुर एवं भावविभोर प्रस्तुति समस्त श्रोताओं के मन एवं उनके इर्द-गिर्द के वातावरण को पूर्णतया भक्तिभाव से ओतप्रोत करने में सक्षम हैं| पंडित जी की सुमधुर आवाज़ में राम की स्तुति का वर्णन शान्ति तथा आनंद का अनुभव कराती है| आपके स्वरों में साक्षात भगवान राम के दर्शन होते हैं, उनकी छवि उभर कर आती है| ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी सुन्दरता और गुण अथाह है| अंत में, जसराज जी द्वारा राम नाम का जप किया गया है जिसके श्रवण द्वारा वास्तव में निशब्द की भावना जागृत होती है एवं सम्पूर्ण वातावरण राममय व भक्तिमय हो जाता है| पंडित जी के मुख से राम भजन अन्तःकरण को द्रवित कर रहा है| प्रारंभ से अंत तक विभिन्न वाद्यों का मनोहारी संगम मन में उत्पन्न नकारात्मक भावनाओं को सकारात्मकता में तब्दील कर आध्यात्मिक पक्ष की ओर अग्रसित करता है|

दुर्गा भक्ति प्रधान भक्ति गीत

"जगदंब जगदंब

सुरनर मुनि सुमिरंत सन्मुख स्तुति करंत

सहस्त्र शीर्षा अनन्त सिर गंग हर संग ||"

भावार्थ: प्रस्तुत पद में माँ आदिशक्ति जो हिन्दुओं की प्रमुख देवी मानी जाती है की स्तुति की जा रही है| हे माँ जगदम्बे समस्त देवता और मुनि जन एकत्रित होकर आपके सम्मुख आपका गुणगान कर रहे हैं| आप सौ भुजाओं वाली हैं और अनन्त शीर्षों वाली हैं, जो हरी के सिर पर गंगा बन कर विराजमान हैं| आदिशक्ति माता जगदम्बा की स्तुति करते हुए देवी-देवता नृत्य कर रहे हैं नारद जी वीणा वादन कर रहे हैं, विष्णु जी मुरली का वादन कर रहे हैं तथा ब्रह्मा जी मृदंग के वादन द्वारा माँ जगतजननी का स्मरण कर रहे हैं| सभी मिलकर आनंदित हो रहे हैं, खुश हो रहे हैं| चंद्रमा और सूर्य की चमक चारों दिशाओं में प्रकाशित हो रही है|

प्रस्तुत भक्ति गीत का सांगीतिक पक्ष

राग: प्रस्तुत भजन राग बसंत के स्वरों में निबद्ध है|

ताल: एकताल का प्रयोग किया गया है|

भजन में प्रयुक्त प्रारम्भिक आलाप राग की प्रमाणिकता को सत्यापित करते हैं| अद्भुत सुर, ताल, लय का अलंकरण तथा बोलबांट, लयदार सरगम व तानों का गंभीरतापूर्वक उच्चारण माँ की स्तुति में शोभा वृद्धि कर रहे हैं|

प्रस्तुत भक्ति गीत का आध्यात्मिक आयाम

उक्त भजन में पं. जी की अद्वित्य गायकी द्वारा उत्कृष्ट एवं भव्य तत्वों का सामंजस्यपूर्ण मिश्रण परिलक्षित होता है, जो इस भक्ति गीत को एक गहन आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के रूप में प्रदर्शित करता है| पं. जी राग बसंत की विशेष स्वर लहरियों में भक्ति भाव से ओतप्रोत विभिन्न रसों की उत्पत्ति करते हुए माँ दुर्गा का आवाहन कर रहे हैं| भक्ति का नाम आते ही भक्ति भाव उत्पन्न होते हैं व भावों में रसों की

निष्पत्ति होना अनिवार्य है| प्रस्तुत भजन में भक्ति की भावना से विभिन्न रस परिलक्षित हो रहे हैं, जिसमें श्रृंगार रस, वीर रस व रौद्र रस बहुतायत रूप से दृष्टिगोचर हो रहे हैं| पं. जी विशेष स्वर संगीतियों के प्रयोग से प्रस्तुत भजन द्वारा रसिकजनों के हृदय में आध्यात्मिकता के दीप को और अधिक प्रकाशित व प्रज्वलित कर रहे हैं|

कृष्ण भक्ति प्रधान भक्ति गीत

रानी तेरो चिर जियो गोपाल

बेगिबड़ो बड़ी होय विरध लट, महरी मनोहर बाल

उपजि परयो यह कूंखि भाग्य बल, समुद्र सीप जैसे लाल

सब गोकुल के प्राण जीवन धन, बैरन के उरसाल ||

भावार्थ: प्रस्तुत पद मूल रूप से महाकवि सूरदास द्वारा लिखित है जिसके अंतर्गत वह मैया यशोदा से कहते हैं कि आपका पुत्र एक हज़ार साल जीवित रहे| आपके लल्ला की बालों की लटें जो बहुत खूबसूरती से बढ़ रहीं है, वह समस्त संसार को आकर्षित करने की क्षमता रखतीं हैं| जिस प्रकार समुद्री सीप में लाल रत्न की प्राप्ति अचंभित है उसी प्रकार इस मनोहर बालक का प्राकट्य आपके जीवन की भाग्य रेखा को बलवान बनाता है| यह दिव्य बालक ब्रज वासियों को प्राण जीवन देने वाला है व असुरों का संघारक है कारणवश सम्पूर्ण जगत का रक्षक है|

प्रस्तुत भक्ति गीत का सांगीतिक पक्ष

राग: प्रस्तुत भजन का गायन राग यमन की स्वरावलियों में किया गया है|

ताल: कहरवा (भजनी ठेका) ताल प्रयोग में लाई गई है|

राग यमन के स्वरों में विभिन्न रीति द्वारा आलाप व बोलालाप का प्रस्तुतीकरण, भिन्न-भिन्न स्वराकृतियों द्वारा कृष्ण जी की विशेषताओं का सौन्दर्यपूर्ण वर्णन, चित्ताकर्षिक स्वर, कण, गमक इत्यादि अनेक उल्लेखनीय गुण उक्त भक्ति गीत में दृष्टिगोचर होते हैं| विविध प्रकार के वाद्यों का प्रयोग जिनमें मंजीरा एवं शेहनाई की मंगल ध्वनि, सितार व तबला का मनोहारी वादन मानों असंख्य दीपों की जगमगाहट का प्रकाश बिखेर रहे हों| विभिन्न मुर्की, गमक, मींड का प्रयोग किए जाने पर भी मूल राग के स्वभाव में कोई बदलाव देखने को नहीं मिलता वरन् वही सौम्यता, सहजता व कोमलता पूरे भजन में परिलक्षित होती है जैसे कि मूल राग की प्रकृति है| एक समान लय में धीमे से तेज मन्त्रों की ओर बड़ते हुए बाल गोपाल की विशेषताओं का मंत्रमुग्ध वर्णन श्रोताओं को अचंभित करने में सक्षम है|

प्रस्तुत भक्ति गीत का आध्यात्मिक आयाम

उक्त भजन को और अधिक प्रभावशाली व आकर्षित बनाया पं. जसराज की मधुर आवाज़ ने जिसके अंतर्गत उन्होंने राग यमन के भिन्न-भिन्न स्वर समुदायों को भक्तिमय भावों द्वारा व्यक्त किया है| यह भजन आपके द्वारा गाया गया बेहद सुन्दर व आपकी सबसे प्रसिद्द रचनाओं में से एक है| अष्टछाप के पदों से प्रभावित होकर पं. जी ने इस भजन को स्वर दिए| अधिकतर हर कार्यक्रम में पं. जी इस भजन का गायन अवश्य करते थे| पं. जी ने राग यमन की विशेषताओं को दिखाते हुए जिस तल्लीनतापूर्वक इस भजन का गायन किया है, उसे श्रवण कर समस्त भक्तजन एवं साधकों की आत्मा तृप्त होनी स्वाभाविक है| इस भक्ति गीत का समस्त आकर्षण चार शब्दों में लीन है:- रानी, गोपाल, उरसाल, जंजाल| इन चार शब्दों को राग यमन के मुख्य स्वर समूह में बाँध कर इस भजन को और अधिक श्रृंगारिकता प्रदान की गई| अंत में विभिन्न मनोहारी वाद्यों का द्रुत लय में वादन द्वारा "गोपाल" शब्द पर विश्राम करते हुए भिन्न भिन्न चित्ताकर्षित लयबद्ध चक्र के गायन द्वारा भजन की श्रृंगारिकता को बहुत ही तल्लीनता से उभारा गया|

निष्कर्ष

उपरोक्त व्याख्याओं के आधार पर कहा जा सकता है कि पं. जी की गायकी में भक्ति और श्रृंगार का सम्मिश्रण तो स्वाभाविक है साथ ही आत्म अभिव्यक्ति की सहजता, कोमलता व भाषा की सरसता और सरलता का अद्भुत सामंजस्य भी परिलक्षित होता है जो जन मानस के हृदय को स्पर्श करते हैं|

सन्दर्भ

1. https://sonichits.com/video/Pandit_Jasraj/Hanuman_Lala_Mere_Pyare_Lala
2. https://www.bhajansangrah.in/lyrics/raam-bhajo-aaraam-tajo
3. https://youtu.be/puOOaRHJrik?feature=shared
4. https://aaradhika.com/krishna/rani-tero-chir-jiyo-gopal/